16.5 कल्याणकारी राज्यः समसामयिक विवाद

कल्याणकारी राज्य क्लास्किी उदारवाद के बाज़ारी प्रतिमान तथा समकालीन स्वतंत्रतावाद के बीच एक सामसंधि प्रतीत होता है। इसमें पूंजीवादी स्वतंत्रताओं तथा असमानताओं को समाजवादी समानताओं के साथ मिलाने का प्रयास किया गया है। यह स्वतंत्रता, समानता तथा न्याय के दावों को एक साथ सर्वोत्तम व्यवहारिक रूप देने का यत्न है। यह पूंजीवादी व्यवस्था की अनिवार्यताओं को बनाए रखना चाहता है, परन्तु, इसके साथ जुड़ी त्रुटियों को छोड़ना चाहता है। बड़े-बड़े दावों के बावजूद, कल्याणकारी राज्य से अनेक प्रश्न उभरे हैं। पश्चिमी समाजों में समसामयिक विवाद कल्याणकारी राज्य के वि-ाय तथा कल्याणकारी चिन्तन में आए संकट के बारे में है, विशे-ातः 1970 के दशक के बाद आर्थिक विकास की मंद गति के फलस्वरूप। कल्याणकारी राज्य के सिद्धान्त की यह मान्यता रही थी कि मिश्रित अर्थव्यवस्था पर्याप्त रा-ट्रीय आय का ऐसा स्तर प्राप्त कर कल्याणकारी राज्य आसानी से कल्याणकारी सेवाओं पर खर्च कर सकेगा। वस्तुतः नैतिक आधार पर यह मान्यता सही भी थी। इस कारण कल्याणकारी चिन्तकों का सर्वप्रथम लक्ष्य पुनः वितरणता की वकालत करना थाः शिक्षा, स्वास्थ्य, बेरोज़गारी भत्ता आदि गतिविधियाँ लोगों में समानता ला पाएँगी तथा उन्हे वंचन से राहत मिल सकेगी और कल्याणकारी राज्य नागरिकता के उस रूप को दर्शा पाएगा जो पूंजीवादी बाज़ारू समाज में पनप रही अर्जनशील तथा ऊपरार्थवादी अभिरुचियों को मंद करेगा। परन्तु प्रश्न अनेक हैंः क्या कल्याणकारी राज्य नागरिकों को आवश्यक आय का आश्वासन देता है जिससे वे असुरक्षाओं का मुकाबला कर सकें तथा एक स्थायी, सभ्य नागरिक जीवन व्यतीत कर सके? क्या यह अमीर तथा

16.6 कल्याणकारी राज्य esfoifl़k एक समीक्षात्मक मूल्यांकन

1990 का दशक कल्याणकारी राज्य के लिए एक वास्तविक आघात का साक्षी है। मूल समस्या वित्तीय प्रकार की है। यह तर्क दिया जाता है कि कल्याणकारी राज्य खर्चीले होते हैं। जैसे जैसे जनसंख्या की औसतन आयु बढ़ती जाती है, उसके साथ चिकित्सा, पैंशन तथा शिक्षा आदि सामाजिक सेवाओं पर खर्च भी बढ़ता जाता है, जबकि वह कार्य में लगी जनसंख्या जो इस खर्च को वहन करती है, उसकी संख्या कम होती जाती है। इस प्रकार यह देखा गया है कि कल्याणकारी राज्य की 'माँग' बढ़ती जाती है जबकि उसकी 'आपूर्ति' कम होती जाती है। उदाहरणतः जब बेरोज़गारी बढ़ती है, तो बेरोज़गारी पर खर्च भी बढ़ जाता है; परन्तु काम करने वालों से जो कर एकत्रित किया जाता है, वह कम हो जाता है। 1980 के दशक में हुई मंदी के फलस्वरूप कल्याणकारी कार्यक्रमों को लेकर काफी आशंकाएँ उत्पन्न हो गयी थीं। और फिर अन्तर्रा-ट्रीय दबाव का भी कुछ मतलब होता है। यदि एक राज्य में कल्याणकारिता पर होने वाले खर्च दूसरे राज्य के खर्च से अधिक होता है, तो उस राज्य की अर्थव्यवस्था की अन्तर्रा-ट्रीय प्रतिस्पर्धा में साख कम हो जाती है। जैसा कि पीयरसन ने संकेत दिया है, अन्तर्रा-ट्रीय अर्थव्यवस्था की और अधिक मुक्त प्रवृति ने रा-ट्रीय कल्याणकारी राज्य के विकास की संभावनाओं को सीमित कर दिया है। अंततः काम करने की इच्छा पर कल्याणकारिता का प्रभाव भी कल्याणकारी राज्य के लिए एक समस्या बन कर उभरा है। यदि लोगों को मालूम हो कि उन्हें बेरोज़गारी वेतन तथा दूसरे लाभ मिलने ही हैं, तब वह काम नहीं करते। ऐसी प्रवृत्ति उनको अवश्य प्रभावित करती है जो कर के रूप में अपनी आय का एक बड़ा हिस्सा राज्य को इसलिए दे देते हैं कि कल्याणकारी कार्यक्रम जारी रह सकें। अनेक देशों में, कल्याणकारी राज्य के जनसमर्थन का तेज़ी से पतन हुआ है। अतः कल्याणकारी राज्य की वर्तमान स्थिति में, विवाद का मुख्य मुद्दा यह है कि क्या राज्य अमीर से गरीब तक धन के पुनः वितरण के अभिकरण के रूप में काम करे या यह कल्याणकारिता के न्यूनतम स्तर की उपलब्धि के लिए "एक सुरक्षा जाल" के रूप में काम करे, ताकि जिसके कारण कोई गिर न सके। वर्तमान प्रवृति केवल एक सुरक्षा जाल का समर्थन करती है।

16.7 सारांश

कल्याणकारी राज्य क्लास्किी उदारवाद का 20वीं शताब्दी के सकारात्मक उदारवाद में हस्तांतरण का फल था। उदारवादी सिद्धान्त के सम्पूर्ण संशोधन के लिए राज्य के स्वरूप तथा उसके कार्यों की पुनः समीक्षा आवश्यक थी। इस कारण स्वतंत्रता, समानता, न्याय, स्वतंत्रता तथा कानूनी दमन के बीच सम्बन्धों आदि पर पुनः विचार करना भी आवश्यक था। राज्य को एक आवश्यक बुराई समझने की अपेक्षा, सकारात्मक उदारवाद राज्य को एक सकारात्मक अच्छाई समझता है, उसे व्यक्ति तथा सामाजिक कल्याण का एक साधन शो-ित करता है, उसे समाज के सामान्य हितों का संरक्षक घो-ित करता है।

सकारात्मक उदारवाद के विचार की पहल करने वाले, 19वीं शताब्दी में जे. एस. मिल, टी एच. ग्रीन, डी. रिचि, हॉब्सन आदि थे और उसे बाद में, 20वीं शताब्दी के दौरान तथा विशे-ा दोनों विश्व युद्धों के बीच प्रोत्साहन देने वालों में हैरॅल्ड लास्की, आर. एम. मैकाइवर, जे. एम. कीन्स तथा गैलब्रैथ थे।

कल्याणकारी राज्य ने व्यक्ति के हितों तथा समाज के हितों में सामंजस्य बनाने का प्रयास किया, ताकि उसके माध्यम से जहाँ उसके मूल तत्वों को बनाए रखा जा सके और दूसरी ओर उसके कुप्रभावों

गरीब के बीच आय के पुनः वितरण रूपी प्रयासों से तथा धन को कुछ हाथों में केन्द्रीकरण को रोककर वास्तविक आय की वि-ामताओं का उन्मूलन कर सकता है? क्या मिश्रित अर्थव्यवस्था ऐसी प्रवृति को लाने में सफल हो सकती है, जिसमें निजी क्षेत्र को दबाया, अपंग तथा शक्तिहीन बनाया जा सकता हो? क्या कल्याणकारी राज्य अर्थव्यवस्था को आर्थिक उछालों, संकटों, फलावों तथा आर्थिक मंदीपन से स्वयं को मुक्त कर पाया है? क्या राज्य सेवाओं की आपूर्ति कुशलतापूर्वक कर पाया है? इन सभी प्रश्नों का उत्तर संतो-ाजनक नहीं रहा है।

बैरी के अनुसार, कल्याणकारी सिद्धान्त का कल्याणकारी राज्य के चिन्तन के साथ मिलाया जाना एक बौद्धिक भूल थी। पहले के उदारवादी राजनीतिक अर्थशास्त्रियों द्वारा बाज़ारी व्यवस्था के कल्याणकारी तत्वों को जिन पर वह काफी ज़ोर दिया करते थे, उन पर सामाजिक चिन्तन का निर्माण करने एक बड़ी सैद्धान्तिक गलती थी। परिणाम यह हुआ कि कल्याणकारी राज्य का अनुनेय विस्तार हुआ, जिसके परिणामस्वरूप कल्याणकारी राज्य जिसे बाज़ारी शक्तियों के अनियमित प्रभावों की असुरक्षित व्यवस्था की सुरक्षा हेतु लाया गया था, वह सामाजिक सुविधाओं के एक व्यापक रूप में ऐसे बदल गया, जिसका हस्तक्षेप जैसे प्रारंभिक लक्ष्य के साथ मात्र का आकस्मिक सम्बन्ध था। ऐसा इस कारण से हुआ कि कल्याणकारी चिन्तकों ने उन संस्थाओं पर उचित ध्यान नहीं दिया, जिनसे कल्याणकारी कार्यों के प्रदान किए जाने की आशा की गयी थी। उदाहरण के लिए, यह नहीं कहा जा सकता है कि लोकतंत्र में एक प्रतियोगी दलीय प्रक्रिया तथा राज्य-कल्याण की नैतिक ज़रूरतें एक-साथ पनपने लग जाएँगी। यह अपने आपमें एक गंभीर समस्या थी कि बहुमतीय नियम की प्रक्रियाएँ सकारात्मक नीतियों के कुशल कार्यरूप को संभव कर पाएँगी, भले ही समाज में कितनी ही परार्थोन्मुखी भावनाएँ अथवा सोच विद्यमान हो।

समस्त 20वीं शताब्दी में इस तथ्य पर सहमति थी कि किन्हीं वास्तविक सामूहिक कल्याणकारी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए किसी न किसी रूप में कल्याणकारी राज्य की आवश्यकता है। सोच यह थी कि ऐसे कल्याणकारी कार्यों की आशा किन्हीं ऐच्छिक संस्थाओं से नहीं की जा सकती थी। कल्याणकारी राज्य पर समसामयिक प्रहार यह है कि कल्याणकारिता लाने के लिए ज़ोर-जबरदस्ती की जाती है जिसके फलस्वरूप स्वतंत्रता कम होती है। नॉज़िक जैसे स्वतंत्रतावादी विचारक कल्याणकारी राज्य के विचार को स्वीकार नहीं करते। ऐसे विचारकों का मत है कि बाज़ार अर्थव्यवस्था स्वयं में ठीक है, और फिर कल्याणकारी राज्य की वितरणकारी नीतियाँ कल्याण के नाम पर लोगों के अधिकारों का हनन करती हैं। यह विचारक रॉल्स के साथ इस विचार पर सहमत नहीं हैं कि लोगों का कौशल तथा उनकी प्रतिभा समस्त समाज की सम्पत्ति होते हैं, और उन्हें अपनी प्रतिभाओं का फल लेने का अधिकार वहाँ तक है, जब वह समाज में रहने वाले न्यूनतम लाभान्वितों की स्थिति सुधारते हैं। रॉल्स की सोच का भाव मात्र इतना है कि किन्हीं को किन्हीं दूसरों के श्रम पर कब्ज़ा करने का अधिकार है। स्वतंत्रवादी विचारकों का यह मत है कि इससे दूसरों की संप्रभुता पर प्रहार होना स्वाभाविक है। वे यह भी कहते हैं कि राज्य को अधिक कार्य देना अफसरशाही में वृद्धि करना है, यह स्वतंत्रता के पतन की प्रवृत्ति की और बढ़ाता है और संभवतः अकुशलता की ओर बढ़ना है। ऐसा करने का अर्थ है कि अमीर पर कर लगाकर गरीब का पेट भरना। भले ही नॉज़िक के ऐसे तर्क कि व्यक्ति के अधिकार निरंकुश तथा अनुल्लंघनीय हैं, उन्हें समसामयिक विवाद से बाहर कर देते हैं, परन्तु, जैसा कि बैरी कहते हैं, उनके सशक्त व्यक्तिवाद तथा राज्य-विरोधी विचारों ने सामाजिक सिद्धान्तकारों को यह स्प-टतः बता दिया कि कल्याणकारी लक्ष्यों की प्राप्ति सरकारी यन्त्र से बाहर की संस्थाओं द्वारा भी हो सकती है। क्योंकि नॉज़िक की आलोचना यह है कि राज्य कल्याणकारिता हेतु दमन करता है, इसलिए ऐच्छिक संस्थाओं द्वारा कल्याणकारी समस्याओं के समाधान की संभावना बढ़ जाती है।

पश्चिमी लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं में युद्धोपरान्त कल्याणकारी अनुभव ने सामूहिक संस्थाओं को दिए जाने वाली कल्याणकारी सेवाओं जैसे, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा बीमा आदि की नैतिक वांछनीयता तथा कुशलता-पद्धतियों को सन्देह के घेरे में ला खड़ा किया। इन सेवाओं में आशा-विपरीत विस्तार तथा इनमें लगा सकल रा-ट्रीय उत्पाद का एक बड़ा भाग, वामपंथियों तथा दक्षिणपंथियों दोनों द्वारा गंभीर आलोचना का कारण बन गया। मुश्किल मूलतः उस अस्प-टता से उभरती है कि क्या राज्य द्वारा निभायी गयी भूमिका का लक्ष्य बाज़ारी अर्थव्यवस्था के शिकार लोगों के लिए न्यूनतम आजीविका सुविधाएँ प्रदान कराना है, या सामूहिक संस्थाओं द्वारा मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु असीमित सुविधाओं के दिए जाने की एक व्यापक अवधारणा की वकालत करना है। किस रूप में कल्याणकारिता के सामान्य प्रावधान जैसे शिक्षा तथा स्वास्थ्य कल्याणकारिता के लक्ष्यों को बढ़ाते हैं? क्या लक्ष्यों की प्राप्ति उस रूप में ही रही है, जिस रूप में कल्याणकारी राज्य के विचारकों ने कल्याणकारिता के वि-ाय में चिन्तन-मनन किया था। इन अर्थशास्त्रियों ने कल्याणकारी राज्य को ऐसा मंथन बताया है, जिसमें सेवाओं का खर्च करों के प्राप्त राजस्व द्वारा किया जाता है, जो बाद में सामूहिक तथा प्रायः अनिवार्य सेवाओं जैसे बेरोज़गारी बीमा के रूप में नागरिकों को वापस प्राप्त हो जाती है। यह स्प-ट नहीं है कि क्या तर्क है कि कल्याणकारी राज्य में अनेक लक्षणों के अनिवार्य स्वरूप से व्यक्ति की चयन शक्ति दबा दी जाती है। अतः कल्याणकारी राज्य की व्यवस्था का वास्तविक संगठन लोगों की प्राथमिकताओं का प्रतिबिम्ब नहीं है। आलोचकों ने तो इस तथ्य पर भी संदेह व्यक्त किया है कि कल्याणकारी राज्य ने सामाजिक न्याय उपलब्ध कराया है। आनुभविक जाँच पड़तालों से यह ज्ञात हुआ कि ब्रिटेन में कल्याणकारी सेवाओं का लाभ मध्य वर्ग के लोगों को हुआ है और ऐसे विश्वस्त प्रमाण प्राप्त हुए हैं कि लगभग सभी लोकतान्त्रिक समाजों में मध्य वर्ग के लोग ही लाभान्वित हुए हैं। अर्थशास्त्र में इसे "निदेशक का कानून" (Director's Law) कहा जाता है। साधारण शब्दों में, इस कानून का अर्थ यह है कि विकसित पश्चिमी लोकतान्त्रिक राज्यों में मतदाताओं की संख्या में न तो इतने अमीर आते हैं और न ही गरीब, इसलिए कल्याणकारी सेवाओं का वितरण मध्य वर्ग के हिस्से में ही जाता है। यह भी ध्यान में रखने वाली बात है कि नीयतत कल्याणकारी नीतियाँ एक वर्ग की सहायता करती हैं और बिना समझे दूसरे वर्ग को हानि पहुँचाती हैं। उदाहरणतः किराया नियंत्रण कानूनों को ही लीजिएः किराये के आवासों की पूर्ति को हिमकारित्र (freeze) करके अनेकों को बेघर कर दिया जाता है। इसी प्रकार न्यूनतम मज़दूरी कानूनों को ही लीजिएः उन संभावित बेरोज़गार श्रमिकों को बेरोज़गारी भत्ता नहीं दिया जाता है, जिनकी उत्पादन क्षमता प्राप्त बेरोज़गारी न्यूनतमता से भी कम होती है। कुछ अधिक प्रकार का नैतिक तर्क यह है कि कल्याणकारिता की अधिकता ऐसी संस्कृति को जन्म देती है, जो अच्छी नागरिकता के अनुकूल नहीं होती। इन तर्कों का एक मुख्य उदाहरण उन विवादों का संकेत देता है, जो रा-ट्रपति जान्सन के 'महान समाज' कार्यक्रम से सम्बंधित हैं। राज्य द्वारा कल्याणकारिता हस्तक्षेप का यह एक सशक्त कार्यक्रम था, जो कल्याणकारी राज्य के अनेक आलोचकों के लिए परीक्षण मामला बन गया। इस कार्यक्रम का वार्-िक खर्च 2000 करोड़ डॉलर था और जिसमें चिकित्सा सहायता, आश्रित बच्चों के परिवारों को सहायता, लगभग 5 करोड़ बच्चों को खान-पान की सहायता आदि कार्यक्रम सम्मिलित थे। इस कार्यक्रम के पीछे भाव यह निहित था कि पूंजीवाद से वंचन पनपता है। यह ध्यान में रखने योग्य बात है कि इस कार्यक्रम के अभिकल्पकों का उद्देश्य किसी कल्याणकारी समाज की स्थापना नहीं था, बल्कि अस्थायी रूप से सहायता मात्र था या वैयक्तिक स्वायत्तता की बढ़ोतरी था। प्रवेश्कों में यह सहमति बन पायी है कि कल्याणकारी राज्य व्यवस्था अपने उद्देश्यों को पूरा करने में विफल रही है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत यद्यपि गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की संख्या कम हो गई थी परन्तु, इसका मतलब यह नहीं था कि अधिक लोगों को स्वायत्तता प्राप्त हो गई थी, बल्कि सत्य यह था कि अधिक लोग कल्याणकारी खर्च पर निर्भर हो

गए थे। चार्ल्स मर्रे प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष गरीबी में भेद करते हैं: एक ओर ऐसे गरीब होते हैं, जिन्हें सहायता तथा कल्याण की वास्तविक रूप से ज़रूरत होती है; दूसरी ओर ऐसे लोग होते हैं, जिन्हें यदि सहायता नहीं दी जाती तो वह वंचन अर्थात् निर्धनता की स्थिति में आ पाएँगे। उनके अनुसार, जब ऐसा कार्यक्रम लागू किया गया था तब अप्रत्यक्ष निर्धनता 18 प्रतिशत तक थी, परन्तु जैसे यह कार्यक्रम आगे बढ़ता गया, यह संख्या बढ़ती चली गयी। 1980 में इसकी संख्या 22 प्रतिशत तक पहुँच गयी। इस कार्यक्रम की एक तस्वीर और भी है। इसके अंतर्गत पारम्परिक परिवार संगठन टूटने के कगार पर पहुँच गए तथा अविवाहित माताओं को दिए जाने वाली सहायता ने अवैधता की स्थिति में वृद्धि कर दी। फलस्वरूप एक बड़े स्तर पर नैतिक संकट का प्रमाण मिलने लगा। इस संख्या पर, कि कितने लोग कल्याणकारी सेवाओं से लाभान्वित हुए हैं, विवरणकारों में खासा मतभेद है, परन्तु अधिकांश विवरणकारण स्वीकार करते हैं कि 'महान समाज' कार्यक्रम द्वारा कल्याणकारी सेवाओं पर निर्भर लोगों की संख्या कम नहीं हुई है।

नागरिकता सिद्धान्त के आलोचकों का भी मत है कि नागरिकता का आदर्श समाज के संसाधनों पर व्यक्तियों के दावे को स्वीकार करता है, परन्तु साथ ही, यह इस तथ्य पर भी ज़ोर देता है कि इन दावों के साथ-साथ सामाजिक दायित्वों की व्यवस्था भी होनी चाहिए। व्यक्ति मात्र अनामिक पात्र नहीं होते, जिन्हें आर्थिक सम्बन्धों तथा उचित आचरण के सामान्य नियमों द्वारा बाँधकर समाज नहीं बना दिया जाता, अपितु वह विशे-ा प्रकार के समाजों के अभिज्ञानित सदस्य होते हैं, जो सामाजिक अधिकारों तथा सामाजिक कर्त्तव्यों के जटिल ताने-बाने में एकीकृत होते हैं। काम को एक सामाजिक दायित्व समझा जाना चाहिए, जो करों की अदायगी तथा कानूनों के पालन से जुड़ा होता है। लारेन्स मीड की 'महान योजना' के विरुद्ध शिकायत यह थी कि इसके लाभ हकदारी के रूप में वितरित किए गए थे और जो उन लाभों को ग्रहण कर रहे थे, उन्हें किन्हीं प्रकार के दायित्व नहीं दिए गए थे। दूसरे शब्दों में, ज़रूरत एक सशक्त तथा बड़े राज्य की है, जो कार्य के सामाजिक दायित्व को कार्य रूप दिला सके और कल्याणकारिता की प्राप्ति को निभाए गए कर्त्तव्यरूपी कार्य के साथ जोड़ सके। परन्तु ऐसा करने से स्वतंत्रता में कमी होने की संभावना बढ़ जाती है।

ऐसी मान्यता की प्रवृति निरन्तर बढ़ रही है कि व्यक्ति का कल्याण एक निजी मामला होता है और जो राज्य पर अधिक निर्भर रहने से आवश्यक नहीं है कि उसमें वृद्धि हो सके। एक व्यक्ति की भलाई आय में वृद्धि के अतिरिक्त अन्य अनेक तरीकों से संभव हो सकती है: यह निजी प्रति-ठा तथा वैयक्तिक स्वायत्तता का मिला-जुला कार्य है। कल्याणकारी राज्य के आलोचकों के मस्ति-क में ऐसे गैर-आर्थिक प्रकार के प्रभाव तर्क रूप में आते हैं, जब वे राज्य के हस्तक्षेपी उपायों का विवरण देते हैं जिनमें, उनके अनुसार, निर्भरता तथा 'कार्य न करने' की संस्कृति की प्रवृत्ति होती है। ऐसा भी तर्क दिया जाता है कि वंचन तथा निर्धनता के तत्व आंशिकतः सामाजिक व सांस्कृतिक समस्या रूप के होते हैं। यह संसाधनों के अभाव के कारण मात्र नहीं पनपते, अपितु उन संस्थाओं द्वारा बनते-सवंरते हैं, जो उस खराबी की वृद्धि को प्रोत्साहन देते हैं, जिसके उन्मूलन हेतु उन्हें बनाया जाता है। 20वीं शताब्दी के दौरान, कारणों की दिशा कल्याणकारी संस्थाओं के जटिल संगठन से हटाकर कल्याणकारी समस्याओं के पुनःविवरण की ओर मोड़ दी गयी है। यह महसूस किया जा रहा है कि अब अनुकूल समय आ गया कि कल्याणकारिता के सम्पूर्ण समस्या का पुनःनिरीक्षण किया जाए। स्वयं व्यक्तियों पर विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत शिक्षा, स्वास्थ्य, पैंशन आदि छोड़ एक नयी सहमति की शुरुआत की जा सकती है। ऐसा भी सोचा जा रहा है कि कल्याणकारी सेवाओं को छोटे राजनीतिक इकाइयों में विकेन्द्रीकरण नैतिक दावों की वृद्धि तथा नागरिकता से जुड़े दायित्वों की संवृद्धि का एक अत्यधिक वांछनीय तरीका है।

का उन्मूलन किया जा सके। राज्य का उद्देश्य कानून तथा व्यवस्था की स्थापना मात्र नहीं है, अपितु सामान्य हितों को प्राप्त करना है और कल्याणकारी सेवाओं रूपी कर्त्तव्यों को निभाना भी है।

कल्याणकारी राज्य के माध्यम से सकारात्मक उदारवाद ने राज्य की शक्ति को उनके काम के बाज़ार-मूल्य के भेदभाव बिना न्यूनतम आय की सुरक्षा, सामाजिक आकस्मिकताओं जैसे बीमारी, बुढ़ापे तथा बेरोज़गारी आदि का मुकाबला करने में सहायता, बिना वर्गीय भेद के सभी नागरिकों को सामाजिक सेवाओं को उपलब्ध कराने के लिए प्रयोग किया। दूसरे शब्दों में, कल्याणकारी राज्य सभी नागरिकों को स्वास्थ्य, आर्थिक सुरक्षा, तथा सभ्य जीवन के न्यूनतम स्तर का आश्वासन देता है, ताकि लोग समाज में उसकी सामाजिक तथा सांस्कृतिक विरासत में अपनी अपनी क्षमताओं के अनुरूप भाग ले सकें।

उदारवाद की मान्यता है कि कल्याणकारी राज्य ही एक लोकतान्त्रिक राज्य होता है। ऐसे राज्य में ही कुछेक औपचारिक संस्थात्मक यांत्रिक व्यवस्थाएँ होती हैं, जो उदारवादी लोकतान्त्रिक समाज के लिए उसके अनिवार्य तत्व समझे जाते हैं। कोई भी राज्य जो कल्याणकारी है और संस्थात्मक दृ-टि से लोकतान्त्रिक नहीं है, वह उदारवादी राज्य हो ही नहीं सकता। दूसरे शब्दों में, लोक कल्याणकारी राज्य शब्द उन पूंजीवादी देशों के राज्यों के लिए प्रयोग में लाया जाता है, जो कल्याणकारी कार्यों रूपी सकारात्मक लक्ष्य प्राप्त करते हैं, जबकि उनमें सरकार औपचारिक लोकतान्त्रिक संरचना के दायरे को बनाए रखती है।

कल्याणकारी राज्य बाज़ारी अर्थव्यवस्था अर्थात् उत्पादन के पूंजीवादी तरीके के दायरे में ही परिचालित होता है। परन्तु इसका यह भी विश्वास है कि बाज़ार का अबाध परिचालन व्यक्ति तथा अर्थव्यवस्था के लिए भयानक भी सिद्ध हो सकता है। इस का मत है कि निर्धनता, आश्रिता, आर्थिक असुरक्षा, गरीबों की अयोग्यता तथा प्रकृति का प्रतिफल नहीं होती, परन्तु समाज में बदलती संस्थाओं का फल होती हैं। इन असुरक्षाओं को अहस्तक्षेप अर्थव्यवस्था को निरूपित कर उनका उन्मूलन किया जा सकता है तथा नियोजन के किसी रूप के माध्यम द्वारा कल्याणकारिता की प्राप्ति संभव हो सकती है। परन्तु ऐसा नियोजन बाज़ारू अर्थव्यवस्था के साथ मिलकर हो। सकारात्मक उदारवाद मिश्रित अर्थव्यवस्था का पक्ष लेता है।

सकारात्मक उदारवाद कल्याणकारी राज्य के लिए अनेक प्रकार की औचित्यताएँ देता है जैसे, कल्याणकारी राज्य व्यक्ति की स्वायत्तता तथा उसकी स्वतंत्रता को बढ़ाता है; यह समाज के विभिन्न वर्गों में अधिक समानता ला पाता है; यह सामाजिक न्याय उपलब्ध कराता है; यह दायित्वपूर्ण नागरिकता की स्थापना करने में सहायक है। इसके बावजूद भी, कल्याणकारिता के वितरण से सम्बंधित अनेक प्रकार के विवाद जारी हैं, जैसे (i) क्या कल्याणकारिता उनके लिए हो जिन्हें इस की ज़रूरत है अथवा सार्वजनिक रूप की हो, (ii) क्या यह धन-राशि के रूप में हो अथवा सुविधाओं के रूप में; (iii) क्या यह बीमा नियम पर आधारित हो जिसमें लोग स्वयं पूंजी लगाएँ या सादे वितरणता के रूप में हो; (iv) क्या कल्याणकारिता के लिए कोई संवैधानिक प्रावधान हो या इसे लोगों/गुटों की सौदेबाजी पर छोड़ दिया जाए; (v) क्या कल्याणकारी राज्य उनको जिनको बाज़ारी समाज से बचने में असमर्थता है, सुरक्षा दे या उनको जो 'बाज़ार' के विचार को कल्याणकारिता का विरोधी मानते हैं।

कल्याणकारी राज्य की स्वतंत्रतावादी विचारकों द्वारा आलोचना की गई है। स्वतंत्रतावादी विचारकों का मत है कि कल्याणकारी राज्य व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा उसकी स्वायत्तता को मंद कर देता है; उत्पीड़नता को जन्म देता है; व्यक्ति के अधिकारों का उल्लंघन करता है। सामान्यतः विकसित देशों

में जिन्होंने कल्याणकारी प्रतिमान अपनाया हुआ है, पूंजी तथा प्रौद्योगिकी शक्ति का अधिकतम केन्द्रीकरण है। कल्याणकारी राज्य असुरक्षाओं का उन्मूलन नहीं कर पाया है। पैंशन, करमुक्त राशि, पद-क्षीण की स्थिति में क्षतिपूर्ति, जीवन बीमा, बीमारी, उच्चतर शिक्षा, आवास आदि कल्याणकारी सुविधाएँ, जनसंख्या के उन एक-तिहाई लोगों में केन्द्रित हो कर रह गयी है जो पहले ही आर्थिक रूप से बेहतर स्थिति में होते हैं। बेरोज़गारी तथा आर्थिक फुलाव कल्याणकारी राज्य की स्थायी समस्याएँ बनी हुई हैं। उदारवादी समतावाद के आदर्श गलत नहीं हैं, परन्तु, उन्हें रॉल्स तथा अन्य विचारकों द्वारा सुझाए गए सुधारों से भी अधिक विस्तृत सुधारों की आवश्यकता है।

16.8 अभ्यास प्रश्न

1. सकारात्मक उदारवाद के विकास का अनुरेखण कीजिए।
2. उदारवादी लोकतान्त्रिक कल्याणकारी राज्य पर एक निबन्ध लिखिए।
3. उन आधारों का विवेचन कीजिए जिन पर कल्याणकारी राज्य को उचित ठहराया जाता है।
4. कल्याणकारी राज्य के समसामयिक विवादों का विवरण दीजिए।
5. वर्तमान कल्याणकारी राज्य का समीक्षात्मक मूल्यांकन कीजिए।